समाजशास्त्र

SEM - 1

MJC

Date:- 30/10/25

Topic! - समाजशास्त्र! एक विज्ञान की दृष्टी से

समाजशास्त्र को एक विज्ञान माना जाता है क्योंकि इसमें वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। यह तथ्यों का निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण और व्याख्या करता है। समाजशास्त्र के अध्ययन में वस्तुनिष्ठता, तर्क और कारण-परिणाम के सिद्धांतों का पालन किया जाता है।

→ समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग होता है, जैसे-

1. सांख्यिकीय पद्धति (Statistics Method)
2. सामाजिक सर्वेक्षण विधि (Social Survey Method)
3. सामाजिक निरीक्षण पद्धति (Social observation Method)
3. केस स्टडी पद्धति (Case study Method)

इन विधियों द्वारा समाजशास्त्र को वैज्ञानिक रूप मिलता है।

→ समाजशास्त्र में निरीक्षण एवं तथ्यों का संग्रहण होता है। समाजशास्त्री समाज में घटित घटनाओं को वस्तुनिष्ठ दृष्टी से देखते हैं और अनुभवजन्य (Empirical) आधार पर अध्ययन करते हैं।

→ समाजशास्त्र में तथ्यों का वर्गीकरण और व्याख्या होती है। इससे तथ्यों के बीच के संबन्ध वैज्ञानिक दृष्टी से स्पष्ट होते हैं।

→ समाजशास्त्र में कारण-परिणाम संबन्धों की स्थापना होती है। समाजशास्त्र में घटनाओं के पीछे छिपे कारणों की खोज की जाती है क्योंकि हर घटना के पीछे एक कारण होता है। इस प्रकार समाजशास्त्र कारण और परिणाम के संबन्धों की व्याख्या करता।

→ समाजशास्त्र में क्या है का वर्णन किया जाता है। समाजशास्त्र वस्तुनिष्ठ (objective) दृष्टीकोण अपनाता है। यह समाज को "जैसा है ("As it is") वैसा ही प्रस्तुत करता है, न कि 'जैसा होना चाहिए।"

→ समाजशास्त्र में तथ्यों का सत्यापन संभव है। समाजशास्त्र में एकत्र किये गए तथ्यों का पुनः-परीक्षण (verification) द्वारा परखा जा सकता है। इससे निष्कर्षों के सत्यता की पुष्टि होती है, जिससे यह विज्ञान की कसौटी पर खड़ा उतरता है।

समाजशास्त्र में भविष्यवाणी भी संभव है।